

"परिमल पुष्प सरणी प्रसरे दिव्यता
अंबर श्वेत तदपि विरल साधुता..."

आ पंक्ति आतमे गूंज रही
आजे काकाजिनो निर्वाण दिन
योगीज आत्मा मनाया... रोम रोम स्वीकार्या
परमात्मा स्वर्पनां दर्शन कर्या
रोमे रोमे धारीने समग्रनां समर्पण थई ज गयां
ते काकाज योगीरूप... योगीस्वर्प... अेकाकार थया
ते आजे स्मृतिमां गूंज रहुं.

हे साहेबदादा !

आपनां दर्शन कर्या छे... रोज करीअे छीअे
अमारे आपनां अण्डं दिव्य दर्शन करवां छे
मन बुद्धि यित्त आपना यरणे लोमी दईअे
'स्व' आपने समर्पित करी वईअे
आपने दिव्य मान्या तेवा संबंधीने मानीअे
आपनुं गम्भुं तेवुं सर्वनुं गमाडीअे... दिव्य मानीअे
ते रोज मानीअे ने मागीअे छीअे
आजे काकाजिनी स्मृति थती रही
आपनी मूर्तिनी स्मृति थती ज रही
काकाजिअे जेम योगी संबंधीने दिव्य मान्या
सौ योगीना ते मारा... 'हुं' सौनो दास
ते अण्डं रोमरोम स्वीकारी वीधुं
'आपे' पण ते स्वीकारी वीधुं
आपश्री अम सौना आत्मप्राण... अमारा साहेबज
ते तो आपे मानी वीधुं
'योगीज'ना सौ मारा...' 'हुं' टणी गयुं
सौने आपे 'साहेब' मान्या ने सौनी सेवा करो छी.
अम सौने अे शीभवो छी



अम सौने तेवां वर्तन करवा बण दो छी
अमारां 'स्व' ओगाणो छी
आपमां... योगीजमां... स्वामी ने श्रीजमां
अमारी वृत्ति जेउता रलो छी
अमारी कसर बतावता रही टाणता रलो छी.
योगीअे अम सौने आपना जोणे मूक्या
ते सौने आपे स्वीकार्या... पोताना गण्णा ने कर्या
ते सौने आतम सुभ दो छी ने सुभी करो छी.

हे दयाणु ! हे साहेबदादा !

आज सुधी आप ज आ साधुताना मार्ग पर प्रकाश पाथरो छी
आंगणी पकडी दोरता रलो छी
लवे अमने अमारा मटाडी आपमां अेकाकार करता रलो छी
अम सौने आपनां संबंधीने निर्दोष मनावता रलो छी
अम सौने संबंधी सर्वनी साथे व्यवहार करावता रलो छी
ते करवा अण्डं बण पूरता रलो छी
'स्वामिनारायण' मात्रने आपे निर्दोष मान्या छे
धर्म प्रधान प्रत्येकने आपे स्वीकार्या ने मान्या छे
तेम अमे पण मानीअे ने तेवां वर्तन-व्यवहार करीअे
तेवुं आप ठंरछो छी... ने करावता रलो छी
ते रीते वर्तन सहजवस्थांमं करी आप योगीस्वर्प थया...
तेम अम सौ पर आप कृपाशिष वरसावो
अमे अमारा मटी जईअे... संपूर्ण केवण आपना थई जईअे
आपने प्रतिपण राज करवा प्रत्येक क्षण जूवी वईअे.
आपना टरमा प्राणटयमंगले अमारा सौनी आ प्रार्थना छे.
आप योगीमां... आप श्रीज-स्वामीमां तदाकार
ते भावे आपनां दिव्य दर्शन अण्डं करी वईअे
ते भावे आपनां सौ साथे वर्तन करता रहीअे
ते प्रार्थना करी आपना यरणे कोटि वंदन धरीअे छीअे.

साधु शिखण्डाक्षना जय स्वामिनारायणा.

७ मार्च २०२१, काकाजि निर्वाणदिन

**साधु हृदयणी
प्रार्थनागंगा**